राहुल जी का भाषा–विषयक दृष्टिकोण

– डॉ. इशरत खान
प्रवक्ता (हिन्दी) हिन्दी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

राहुल जी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं पर लिखा। उपन्यास, कहानी, निबंध, इतिहास, यात्रा, भाषा, और दर्शन आदि विषय उनकी लेखनी से जीवन्त हो उठे।

राहुल जी बहुभाषाविद् थे। उनको देश–विदेश की अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वह लगभग दर्जनभर भाषाएँ जानते थे।

आपके समय में मुख्य रूप से हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, उर्दू–हिन्दी मिश्रित हिन्दुस्तानी और प्रान्तीय भाषाएँ प्रचलित थीं।

उपर्युक्त भाषाओं में से वे हिन्दी भाषा के ही पक्ष में थे। लेकिन उन्होंने ऐसा कहीं भी नहीं कहा है कि अन्य भाषाएँ हिन्दी की अपेक्षा निम्न स्तर की हैं।

हिन्दी भाषा को वरीयता देने के पीछे, उनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय था। हिन्दी भाषा का समर्थन, संपूर्ण भारत राष्ट्र के हित को देखते हुए किया।

राहुल जी की दृष्टि में किस प्रकार की हिन्दी भाषा श्रेष्ठ है? इस सन्दर्भ में वह हिन्दी भाषा के दो रूप मानने के पक्ष में हैं।

पहले रूप में राहुल जी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा के पक्ष में हैं, अर्थात हिन्दी भाषा शुद्ध संस्कृत–निष्ठ होनी चाहिए।

संस्कृत–निष्ठ हिन्दी भाषा के विषय में उनका कथन है :–(संस्कृत तत्सम, तद्भव शब्दों को स्वीकार करने का सिद्धान्त हिन्दी में ही नहीं, भारत की अन्य भाषाओं में शताब्दियों पहले स्वीकार किया जा चुका है। यदि हम आज उस सिद्धान्त को छोड़ते हैं तो अपनी भाषा को, जो अपनी उक्त विशेषता के कारण पढने समझने में सरल हो सकती थी– और दुरूह बनाते हैं।[1]

इसका प्रयोग, दार्शनिक कहानियों, उपन्यासों और निबन्धों में वे स्वयं करते है।–

जैसे– प्रस्तुत उद्धरण में इस भाषा का रूप लक्षित होता है।–

(अचिन्त्य विहार बडा ही रमणीय विहार था। एक हरितवसना पर्वत स्थली को एक अर्धचन्द्राकार प्रवाहवाली नदी काट रही थी। इसी क्षुद्र किन्तु, सदानीरा सरिता के बायें तटपर अवस्थित शैल को काटकर शिल्पियों ने कितने ही गुहामय सुन्दर प्रतिमा–गेह निवास–स्थान तथा सदा–भवन बनाये हैं)[2]

इस सम्बन्ध में, दूसरे रूप में वे प्रान्तीय भाषाओं से समृद्ध हिन्दी को ही महत्त्वपूर्ण मानते थे। राहुल जी का हिन्दी भाषा के प्रति राष्ट्रीय दृष्टिकोण इसी हिन्दी रूप में दिखता है, जहाँ वह प्रान्तीय भाषाओं से समृद्ध हिन्दी को ही महत्त्व देते हैं, अर्थात उनका कहना है कि वह हिन्दी ही अच्छी हिन्दी है, जिसमें प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग भी हो। यहीं उनका हिन्दी भाषा के प्रति राष्ट्रीय दृष्टिकोण दिखाई देता है। यह हिन्दी भाषा का सरल रूप भी है, जिसे सम्पूर्ण भारत के निवासी पढ सकते हैं, समझ सकते हैं। इस भाषा का रूप उनकी कहानियों में

---

1. राहुल सांकृत्यायन : साहित्य निबन्धावली पृ. सं. ४६
सन्दर्भ उल्लेख – रामचन्द्र तिवारी : हिन्दी का गद्य साहित्य : विश्वविद्यालय प्रकाशन पृ. सं. ३८४
2. राहुल सांकृत्यायन : वोल्गा से गंगा : किताब महल, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या २३६ (सुपर्ण यौधेय)

मिलता है– इस दृष्टि से प्रस्तुत उदाहरण उल्लेखनीय है:– (मधुपुरी सवा सौ वर्ष पुरानी विलासनगरी है । उसके पहले वही लोग यहाँ के घने जंगलों में अपने पशुओं को चराते थे, जो अब उसकी सीमा के बाहर अपने छोटे–छोटे गाँवों में रहते हैं । सभी बातों में यह लोग बहुत पिछडे हुए हैं, लेकिन पिछडा होने का मतलब बुरा होना नहीं है ।)[1] वे अंग्रेजी और उर्दू मिश्रीत हिन्दुस्तानी के विरोधी थे ।

उन्होंने उर्दू भाषा तथा उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी का विरोध किया । इसके दो कारण वे बताते हैं । पहला कारण तो यह है कि यह भाषा विदेशी और कठिन है । दूसरा कारण यह है कि भारतीय स्तर पर यह भाषा व्यापक नहीं है । इस भाषा के सहारे हिन्दी भाषी प्रान्तों में तो हम काम चला सकते है, लेकिन अहिन्दी भाषी प्रान्तों में काम नहीं चला सकते हैं ।

राहुल जी ने अपनी प्रान्तीय भाषा भोजपुरी में भी नाटक लिखे हैं ।[2] अंग्रेजी भाषा का राहुल जी को बहुत अच्छा ज्ञान था, परन्तु हिन्दी भाषा के समक्ष वह अंग्रेजी भाषा की भी कटु आलोचना करते हैं । उनका कहना था कि जहाँ हिन्दी भाषा से ही काम चल सकता है, वहाँ अंग्रेजी भाषा का क्या काम ? ' मेमसाहब ' कहानी में हिन्दी भाषा का महत्त्व स्पष्ट करते हुए भारतीयों के अंग्रेजी भाषा प्रेम पर तीखा व्यंग किया है – प्रस्तुत उदाहरण इसी बात को स्पष्ट करता है–

(सेठानी पूरी मेम हैं, भाषा उनकी अंग्रेजी है और उत्तर भारत के हिन्दी प्रधान प्रदेश की रहने वाली होने पर भी, वह अंग्रेज मेमों जैसी हिन्दी और सो भी अपने नौकर–चाकरों से ही बोलती है ।)[3]

हाँ विदेशों में जहाँ हिन्दी भाषा से काम नहीं चल सकता है, वहाँ अंग्रेजी भाषा को ही अपनाना चाहिए । ऐसा राहुलजी भी मानते थे । शिक्षा के क्षेत्र में वे हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने के पक्ष में थे, अंग्रेजी माध्यम से नहीं । इस मुद्दे पर वे इतने अडिग थे कि पार्टी तक छोड दी ।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि हिन्दी भाषा के प्रति उनमें पूर्ण निष्ठा थी । उनका हिन्दी प्रेम दिन पर दिन बढता गया ।

उनका कहना था कि प्रान्तीय भाषाओं के सहयोग से राष्ट्रभाषा हिन्दी को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है ।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा के प्रति उनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय था ।

1. राहुल सांकृत्यायन : मधुपुरी : हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली पृष्ठ संख्या ६ (रुपी कहानी)
2. तीन नाटक (सन् १९४२)
   पाँच नाटक (सन् १९४२)
3. राहुल सांकृत्यायन : मधुपुरी,
   हिन्द पॉकेट बुक्स दिल्ली पृष्ठ २१

परीक्षा

आयी परीक्षा ! धडकने लगा दिल !
दिन का चैन चला गया,
रात की नींद उड गयी ।
यह सोचकर कि परिक्षा पास आयी,
अभी तक मेरी पढाई पूरी नहीं हुई ।
अगर कहीं पाँव फिसल गया,
तो उसे कैसे संभाल सकूँगी ?
मेरे पाँव तो स्थिर हैही नहीं,
अभी तक पाँव संभाळने की ताकत आयी नहीं ।
रात का चाँद चला गया,
सूरज की किरण–सुबह आयी,
दोपहर भी चली जायेगी,
श्याम भी लौटने लगेगी ।
वक्त को कैसे संभाले भला ।
घडी रोकने पर भी रूकती नहीं ।
परिक्षा सामने आती रही,
दिन का चैन जाता रहा ।
रात का सोना उड गया ।
आयी परीक्षा ! दिल धडक गया ।

– कविता नाईक